वर्ष : 1, अंक : 2 जनवरी-मार्च 2017

हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी

(भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार और संवर्धन को समर्पित संस्था)

हिन्दुस्तानी

भाषा भारती

त्रैमासिक पत्रिका

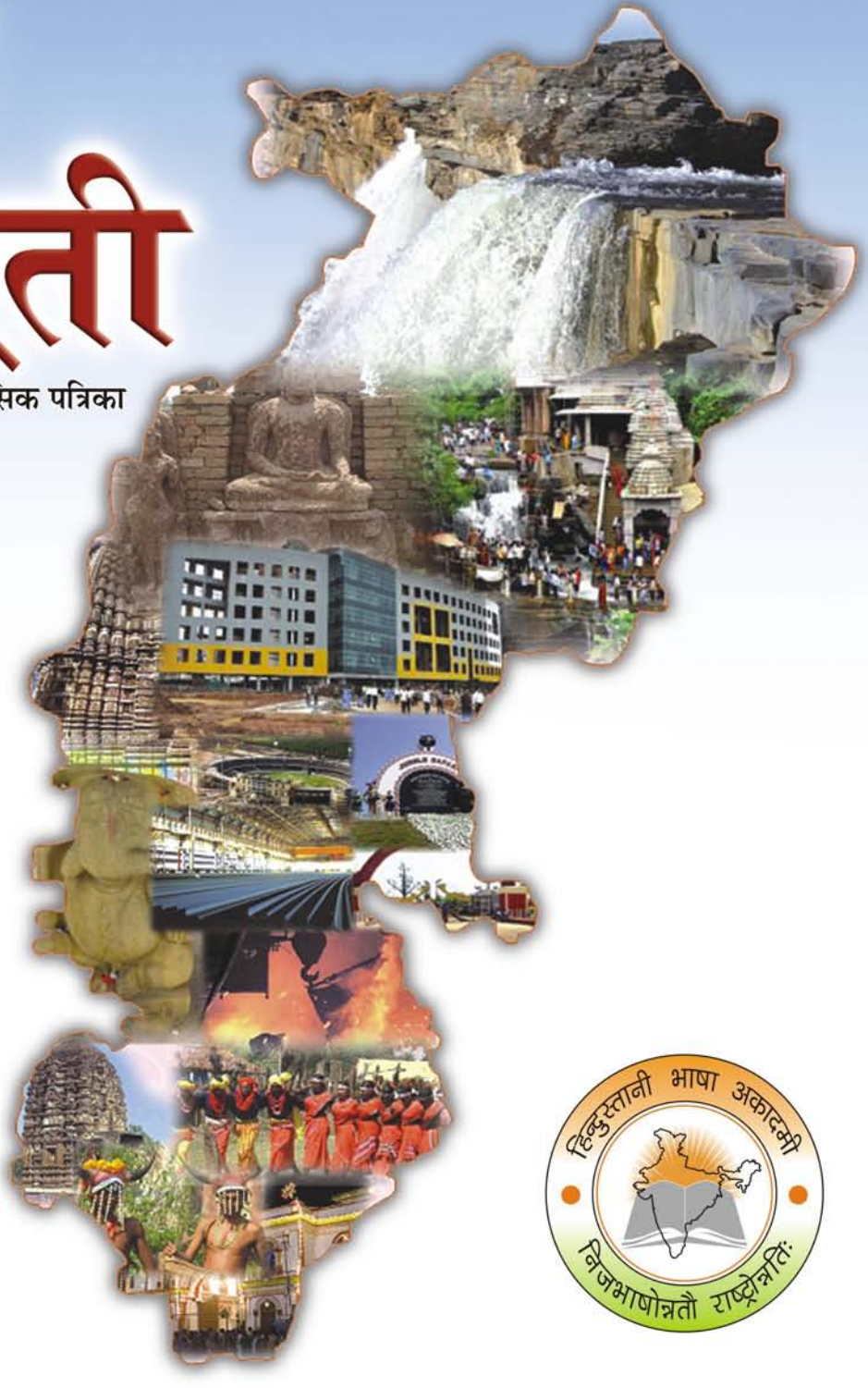

विशेष :

छत्तीसगढ़ी के लोक-तत्व व हिन्दी

हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी

निजभाषोन्नतौ राष्ट्रोन्नतिः

वर्ष : 1, अंक : 2

हिन्दुस्तानी भाषा भारती

मूल्य : 30 रुपये

(भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार और संवर्धन को समर्पित संस्था)

सुधाकर पाठक
सम्पादक एवं अध्यक्ष, हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी

सागर समीप
सह सम्पादक

बृजेश द्विवेदी
प्रवक्ता

विजय कुमार शर्मा
सम्पादकीय सहयोग

अमरनाथ गिरि
कानूनी सलाहकार

कार्यालय :
हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी
3675, राजा पार्क, रानी बाग, दिल्ली-110034
ई-मेल : hindustanibhashabharati@gmail.com
वेबसाइट : www.hindustanibhashaakadami.com
सम्पर्क सूत्र : 09873556781, 09968097816

- पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों के अपने विचार हैं । प्रकाशक का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है ।
- सभी विवादों का निपटारा दिल्ली/नई दिल्ली की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों और फोरमों में ही किया जाएगा ।
- सम्पादन एवं संचालन पूर्णत: अवैतनिक और अव्यवसायिक हैं ।

स्वामी हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी ट्रस्ट, प्रकाशक व मुद्रक सुधाकर बाबू पाठक द्वारा 3675, राजा पार्क, रानीबाग, दिल्ली-110034 से प्रकाशित और सन्नी प्रिन्टर्स, बी-234, नारायणा इन्डस्ट्रियल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-110028 से मुद्रित ।

विषय सूची

सम्पादकीय	02
विशेष सम्पादकीय	03
हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के मुख्य उद्देश्य	04
साक्षात्कार : डॉ. नामवर सिंह	05
ज़िन्दगी की किताब- डॉ. हरीश नवल	07
डॉ. हरीश नवल- एक अद्भुत व्यक्तित्व	08
हिन्दी कैसे बने विश्व-भाषा	10
कविता : डॉ. नीरज दइया की राजस्थानी कविता का हिन्दी अनुवाद	13
हिन्दुस्तानी भाषा साहित्य समीक्षा सम्मान-2015	14
छत्तीसगढ़ी के लोक-तत्व व हिन्दी	17
हिन्दी की बढ़ती लोकप्रियता	22
हिन्दी के अभ्युदय की बाधायें	25
विश्व पटल पर हिन्दी का विकास	27
राजभाषा और उसका स्वरूप	30
अन्य संस्थाओं की नजर से...	32
राजभाषा हिन्दी का विकास : दशा व दिशा	33
हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के प्रमुख प्रकाशन	38
कविता : मंजीत कौर 'मीत' की हिन्दी कविता का पंजाबी अनुवाद	39
हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के संयुक्त आयोजन	39
पुस्तक समीक्षा : कसक...बाक़ी है अभी (कविता संग्रह)	40
फागुन आ गया है	42
अकादमी की साहित्यिक गतिविधियाँ	
विश्व पुस्तक मेला-2017	45
अकादमी के स्टॉल पर पधारे गणमान्य अतिथि	46
हिन्दुस्तानी भाषा साहित्य समीक्षा सम्मान-2015	
दमोह (म.प्र.) के श्री नरेन्द्र दुबे को मिला प्रथम सम्मान	47
सर्व भाषा काव्य महोत्सव	47
वैश्विक साहित्य संस्कृति महोत्सव	48
आगामी कार्यक्रम : लखनऊ पुस्तक मेला	48

सम्पादकीय

मेरी कलम से...

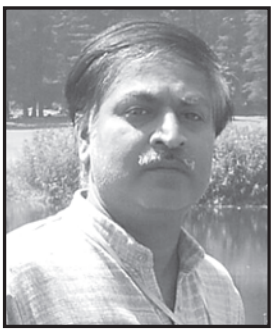

डॉ. रमेश तिवारी
अतिथि सम्पादक

'हिन्दुस्तानी भाषा भारती' पत्रिका का यह नवीनतम अंक आपको सौंपते हुए हम हर्षित और गौरवान्वित हैं । बहुत कम समय में ही आप सुधी पाठकों के सहयोग और उत्साहवर्धन से हमारा मनोबल बढ़ा है और हम दिन-रात आपकी अपेक्षाओं पर खरा उतरने के लिए जी-जान से जुटे हुए हैं । हमारी कोशिश है कि इस पत्रिका के माध्यम से हम हिन्दी के साथ-साथ प्राय: सभी भारतीय भाषाओं के संरक्षण-संवर्धन और विकास के आयामों की ओर सुधी पाठकों का ध्यान आकर्षित कर सकें । अपने सीमित संसाधनों के बावजूद पाठकों को भाषा संबंधी हर प्रकार की उपयुक्त और पठनीय सामग्री उपलब्ध करा सकें । इस अंक में हमने वर्तमान हिन्दी आलोचना के शिखर पुरुष डॉ. नामवर सिंह जी का एक लम्बा साक्षात्कार सम्मिलित किया है । इस साक्षात्कार में साहित्य के इस मनीषी के चिंतन और चिंताओं को अपने प्रश्नों द्वारा सुधाकर पाठक, सम्पादक, अध्यक्ष, हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी ने पाठकों के हित में सामने लाने की पर्याप्त कोशिश की है । उम्र के इस पड़ाव पर जिस गर्मजोशी और उत्साह के साथ डॉ. नामवर सिंह ने सभी सवालों पर अपनी बेबाक राय दी है उसके लिए उनकी जितनी तारीफ की जाये, कम है । उनका स्नेह हम सबको यूँ ही मिलता रहे, यही प्रार्थना है ।

डॉ. हरीश नवल जी के जीवन और व्यक्तित्व-कृतित्व के कई अनछुए पक्षों पर डॉ. रवि शर्मा 'मधुप' जी ने अत्यन्त रोचक शैली में लिखा है । यह लेखन हरीश नवल जी के व्यक्तित्व और अपने समकालीनों तथा अनुजों के प्रति उनके व्यवहार की झाँकी भर ही नहीं दिखाता बल्कि उनके भीतर बैठे एक अल्हड़, निर्भीक योद्धा से भी हमारा परिचय कराता है । किसी को सुई भी चुभ जाए तो सहज ही उसके आँसू निकल पड़ते हैं किन्तु नवल जी की माटी थोड़ी अलग है । वे मुस्कुराते हुए कैंसर को पराजित करने की हिम्मत रखते हैं । हमें पूर्ववर्ती पीढ़ी के ऐसे कारनामों पर बहुत गर्व होता है और हमेशा ही इनसे बहुत कुछ सीखने को मिलता है । हिन्दी भाषा साहित्य के अध्यापन जगत से इतर पत्रकारिता जगत की विशिष्ट हस्ती हैं डॉ. वेदप्रताप वैदिक जी । आज हिन्दी के समक्ष जो चुनौतियाँ हैं और इसके विश्व-भाषा बनने की राह में जो बाधक तत्व हैं, उन पर बड़े ही विस्तार से चिन्तन-मनन करते हुए वैदिक जी का लेख 'हिन्दी कैसे बने विश्व-भाषा' को इस अंक में विशेष रूप से पाठकों के लिए सम्मिलित किया गया है । अंतर्राष्ट्रीय सन्दर्भों और अनुभवों के उदाहरण देते हुए जितनी गहराई के साथ वैदिक जी ने समस्याओं को परत-दर-परत पाठकों के समक्ष रखा है, यदि उन पर पर्याप्त ध्यान देते हुए नीतिगत अमल किया जा सके तो निश्चय ही हिन्दी भाषा के लिए बदलाव की बयार बहेगी और हिन्दी विश्व-भाषा का दर्जा प्राप्त करने में सफल होगी ।

हमारी कोशिश है कि प्रत्येक अंक में आपको किसी एक भारतीय भाषा सम्बन्धी सारगर्भित आलेख उपलब्ध करा सकें । इस अंक में हमने डॉ. मृणालिका ओझा का छत्तीसगढ़ी भाषा सम्बन्धी शोधपरक आलेख 'छत्तीसगढ़ी के लोक-तत्व व हिन्दी' को सम्मिलित किया है । छत्तीसगढ़ी भाषा के साथ-साथ वहाँ के लोक जीवन-व्यवहार का बड़ा ही मनभावन चित्रण करते हुए डॉ. ओझा ने यह आलेख लिखा है । मिट्टी की सोंधी खुशबू, संस्कार गीतों की झनकार और 21वीं सदी में भी स्त्रियों पर होते अत्याचार को जितनी मार्मिकता से लेखिका ने प्रस्तुत किया है, वह अत्यंत मर्मस्पर्शी है । इसके अतिरिक्त हिन्दी की वर्तमान परिस्थितियों का अध्ययन अवलोकन करते आलेख, राजभाषा और उसका स्वरूप, राजभाषा हिन्दी की दशा-दिशा, डॉ. क्षमाशंकर पाण्डेय का समसामयिक निबन्ध 'फागुन आ गया है' इस अंक के विशेष आकर्षण हैं । अन्य स्थायी स्तम्भों के साथ-साथ इस अंक का एक विशेष आकर्षण एक कविता को दो भाषाओं में प्रस्तुत करना है । इसके लिए इस अंक में दो कविताओं का चयन किया गया है । इसके अन्तर्गत डॉ. नीरज दइया की राजस्थानी कविता और उसका हिन्दी अनुवाद तथा मंजीत कौर 'मीत' की एक हिन्दी कविता का और उसका पंजाबी अनुवाद सम्मिलित किया गया है । पत्रिका की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए हम उत्तरोत्तर प्रयासरत हैं, इस सन्दर्भ में आपके पत्रों और सुझावों से भी हमें बहुत कुछ और अलग करने की प्रेरणा मिलती है । आपके स्नेह और सहयोग से हम इस प्रयास को उत्तरोत्तर गतिमान रखेंगे।

माँग और आपूर्ति के बाजारवादी सिद्धांतों की बहुलता भरे वर्तमान परिदृश्य में हम भाषा और लिपि के संरक्षण-संवर्धन की इस यात्रा को जिन चुनौतियों से गुजरते हुए यहाँ तक लेकर आए हैं वह तो एक पड़ाव भर है, मंजिल बहुत दूर है, रास्ते भी मुश्किल हैं । किन्तु हमें आपके स्नेह को सम्बल बनाकर चलना है, अहर्निश चलना है । 'हिन्दुस्तानी भाषा भारती' पत्रिका की यह यात्रा राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी की इन पंक्तियों को स्मरण करते हुए निरन्तर गतिमान है :

संसार भर में आर्यजन जिसकी उतारें आरती, भगवान भारतवर्ष में गूँजे हमारी भारती ।।

हम सब अपनी आसुरी वृत्तियों को होलिका के साथ ही दहन कर जीवन के विविध रंगों के साथ होली मनायें । सभी स्वस्थ हों, सबका जीवन खुशहाल हो, यही शुभकामना है । आप सबको होली की अशेष शुभकामनाएँ...

विशेष सम्पादकीय

प्रश्न हिन्दी की राष्ट्रीय स्वीकार्यता का...

सुधाकर पाठक
सम्पादक एवं अध्यक्ष,
हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी

जिस देश के पास अपनी 22 संवैधानिक भाषाएँ हों जहाँ कोस-कोस पे पानी और चार कोस पे बानी की बात कही जाती है, जहाँ 179 भाषाएँ और 544 बोलियाँ हैं, बावजूद उसका राजकाज सात समंदर पार एक अदने से देश की भाषा में हो रहा है, इस तथ्य पर मंथन होना चाहिए । भारतीय भाषाएँ अभी भी खुले आकाश में सांस लेने की बाट जोह रही हैं । हिन्दी को उसके वास्तविक स्थान पर स्थापित करने के लिए सर्वप्रथम यह आवश्यक है कि इसकी पूरे राष्ट्र में स्वीकार्यता हो । यह स्वीकार्यता आंदोलनों एवं क्रांतियों से नहीं आने वाली है । इसके लिए हिन्दी को रोजगारपरक भाषा के रूप में विकसित करना होगा, इसके साथ ही अनुवाद और मानकीकरण के द्वारा इसे समृद्धता और पुष्टिपुष्टता की ओर ले जाना होगा ।

यह सर्वविदित है कि सारे देश को जोड़ने वाली अगर कोई भाषा है तो वह सिर्फ हिन्दी है, क्यों कि अन्य किसी भाषा की तुलना में इसके बोलने-समझने वाले लोग ज्यादा हैं । इसकी लिपि सरल और वैज्ञानिक है और यह केवल भारत में ही नहीं बल्कि विदेश में भी पठन-पाठन और बोलचाल में प्रयोग हो रही है । इसके साथ ही विदेशों में बसे भारतीय परस्पर बातचीत में हिन्दी का ही प्रयोग करते हैं । प्रश्न उठता है कि इस सबके बावजूद भी हिन्दी का विरोध कहाँ है ? इस प्रश्न पर गम्भीर चिंतन होना चाहिए और उसे दूर किया जाना चाहिए ।

मेरा मानना है कि कुछ अहिन्दी भाषी प्रदेशों में इसका थोड़ा बहुत विरोध हो सकता है, लेकिन अगर हम दृढ़ इच्छा शक्ति से हिन्दी की राष्ट्रीय स्वीकार्यता के लिए मन और वातावरण बना लें तो यह कार्य असम्भव नहीं है । हम क्षेत्रीय भाषाओं के साहित्य के हिन्दी अनुवाद एवं हिन्दी साहित्य का क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद को अपनाकर न केवल उन भाषाओं के नजदीक पहुंचेंगे बल्कि आपसी संस्कृति को समझने की स्थिति में भी आ जाएंगे । इसके अलावा क्षेत्रीय भाषाओं और बोलियों से हिन्दी में शब्द ग्राह्यता के द्वारा भी हम हिन्दी की स्वीकार्यता के अपने उद्देश्य को प्राप्त कर पाएंगे । राष्ट्रीय स्वीकार्यता के माध्यम से जब हम क्षेत्रीय भाषा और संस्कृति को समझेंगे तो निश्चित रूप से हिन्दी सम्पर्क भाषा के रूप में स्थापित होती चली जाएगी और अंग्रेजी स्वत: ही विस्थापित होती चली जाएगी । जब अहिन्दी भाषी प्रदेशों में हिन्दी का विरोध नहीं होगा तो हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनने से कोई नहीं रोक पाएगा ।

वर्तमान समय हिन्दी को उचित स्थान पर स्थापित करने हेतु सबसे अनुकूल है । सरकारी नेतृत्व हिन्दी के प्रति नरम रुख रखता है । सोशल मीडिया और इंटरनेट के इस युग में अब टेलिविजन चैनल भी हिन्दी को प्राथमिकता देने लगे हैं । यही एक ऐसा समय है कि एक साझे मंच के माध्यम से सरकार के समक्ष अपना पक्ष मजबूती से रखा जाए और आज़ादी के बाद से राष्ट्रभाषा बनने की बाट जोह रही हिन्दी को उसके सर्वोच्च स्थान पर विराजमान किया जाए ।

वर्तमान में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में देश की कई संस्थाएं और व्यक्ति अपने कार्यों और प्रयासों से हिन्दी और उसके साहित्य को पोषित एवं पल्लवित करने में कार्यरत हैं जिनमें साहित्य मण्डल, नाथद्वारा, नागरी लिपि परिषद्, नई दिल्ली, राष्ट्रीय शिक्षक संचेतना, उज्जैन आदि प्रमुख हैं । साहित्य मण्डल, नाथद्वारा की पत्रिका 'हरिश्रृंगार', अहिन्दी प्रदेश गुजरात से प्रकाशित होने वाली त्रैमासिक पत्रिका 'विश्व गाथा' सहित कई पत्रिकाएँ भी हिन्दी साहित्य के प्रसार में अग्रणी भूमिका निभा रही हैं । 'हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी' ऐसी सभी संस्थाओं और महानुभावों के पुनीत कार्यों को नमन करती है और साधुवाद देती है । 'हिन्दुस्तानी भाषा भारती' के आगामी अंक में एक स्तम्भ के माध्यम से हम हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार में कार्यरत संस्थाओं/व्यक्तियों के कार्यों को विस्तृत विवरण सहित आपके समक्ष लायेंगे । आचार्य भगवत दुबे के शब्दों में-

भारत माँ के शीश पर, हो हिन्दी का ताज़ ।
तभी वास्तविक अर्थ में होगा सफल, स्वराज ।।

हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के मुख्य उद्देश्य

- हिन्दी की सम्पूर्ण भारत में सम्पर्क भाषा के रूप में स्वीकार्यता और क्षेत्रीय भाषाओं के अधिकार को लेकर चेतनात्मक कार्यक्रमों का आयोजन करना।
- हिन्दी समेत देश की विभिन्न बोलियों का परिरक्षण, संवर्धन और विकास करना, जिससे हिन्दुस्तानी साहित्य और समृद्ध हो सके।
- ज्ञान की विभिन्न शाखाओं से सम्बद्ध भारत तथा विश्व की विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध सामग्री का मानक हिन्दी अनुवाद की व्यवस्था।
- सृजनात्मक साहित्य को प्रोत्साहन एवं उसका प्रकाशन।
- हिन्दी सहित सभी भारतीय भाषाओं के सन्दर्भ ग्रन्थ बनाना और उनका प्रकाशन।
- साहित्यकारों, लेखकों, कवियों, अनुवादकों, वैज्ञानिकों तथा कलाकारों का सम्मान करना।
- हिन्दी समेत सभी भारतीय भाषाओं पर अकादमिक व्याख्यानमाला का आयोजन करना।
- हिन्दुस्तानी साहित्य के प्रसार और प्रचार के लिए वार्षिक सम्मेलन का आयोजन करना।
- हिन्दी साहित्य के वैज्ञानिक स्वरूप को वैश्विक स्तर पर ख्याति दिलाने हेतु विश्व की भाषाओं में समकालीन हिन्दी साहित्य के अनुवाद तथा अन्य भारतीय भाषाओं से हिन्दी में शब्द ग्रहण तंत्र का निर्माण।
- हिन्दुस्तानी भाषाओं के मानकीकरण के लिए कार्यशाला का आयोजन ।
- हिन्दुस्तानी भाषाओं और संस्कृति को प्रोत्साहित करने वाले विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करना।
- भारतीय भाषाओं के प्रोत्साहन हेतु पत्रिका, समाचार पत्रों व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का संचालन करना।
- राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर संगठन का निर्माण व विस्तार
- उत्तर भारत के विभिन्न प्रदेशों में प्रयोग होने वाले हिन्दी शब्दों के मानकीकरण द्वारा इसकी समकालीन उपयोगिता को स्थापित करने का प्रयास। इस हेतु ज्ञान की नवीनतम शाखाओं हेतु मानक शब्दकोशों का निर्माण।
- मुद्रण लेखन में मानक देवनागरी के प्रयोग का प्रचार-प्रसार और हिन्दी तथा क्षेत्रीय भाषाओं के नवीनतम संचार, तकनीक एवं उपकरणों में प्रयोग की दिशा में तकनीकविदों के साथ मिलकर कार्य करना।
- हिन्दी साहित्य और समालोचना को राजनीतिक खेमेबाजी से उबार कर सार्वभौमिक संवाद की ओर ले जाना।
- देशज बोलियों और विधाओं को प्रोत्साहित करना।

प्रकाशन : हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी

'हिन्दुस्तानी भाषा साहित्य समीक्षा सम्मान-2015'
योजना के अन्तर्गत प्राप्त श्रेष्ठ 50 समीक्षाओं का संकलन
हिन्दी साहित्य की समीक्षा विधा पर एक अनूठी, अनमोल एवं संग्रहणीय पुस्तक....
'शब्द गाथा'
और वाणी प्रकाशन द्वारा प्रकाशित 'सुधाकर पाठक' का कविता संग्रह
'ज़िन्दगी... कुछ यूँ ही'
इस योजना के अन्तर्गत दोनों पुस्तकों का मूल्य 300/-
हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी से प्रकाशित पुस्तकें ऑनलाइन नीचे दिये गये लिंक पर उपलब्ध हैं-
http://ukmall.net/hindustanibhasha/

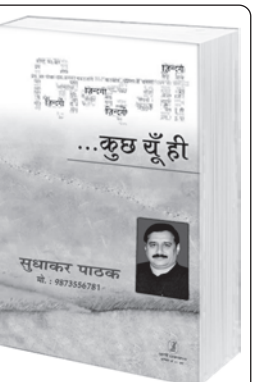

प्रकाशन : वाणी प्रकाशन

साक्षात्कार : डॉ. नामवर सिंह

1 मई 1927 को वाराणसी में जन्मे डॉ. नामवर सिंह आज किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं। विगत कई दशकों से हिन्दी साहित्य की सेवा में गतिशील डॉ. नामवर सिंह प्रसिद्ध कवि, कहानीकार, चिंतक विचारक तथा आलोचना के रचना पुरुष के नाम से जाने जाते हैं। उन्होंने हिन्दी साहित्य में एम०ए० व पी०एच०डी० करने के पश्चात् जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय में काफी समय तक अध्यापन कार्य किया। अवकाश प्राप्त करने के बाद इसी विश्वविद्यालय के भारतीय भाषा केन्द्र में इमेरिटस प्रोफेसर हैं। विभिन्न संस्थाओं में विभिन्न पदों को सुशोभित कर चुके डॉ. नामवर सिंह बेहद अनुभवी एवं कुशल व्याख्याता के रूप में जाने जाते हैं। डॉक्टर सिंह ने आलोचना की दृष्टि से हिन्दी साहित्य जगत में एक अलग मुकाम हासिल किया है। हम सभी जानते हैं कि डॉ. नामवर सिंह जी के शिष्य पूरे भारत में आलोचनात्मक कृतियों के माध्यम से अपने गुरू का नाम ऊंचा कर रहे हैं। डॉ. नामवर सिंह को उनकी आलोचनात्मक पुस्तक 'कविता के नये प्रतिमान' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार दिया गया है।

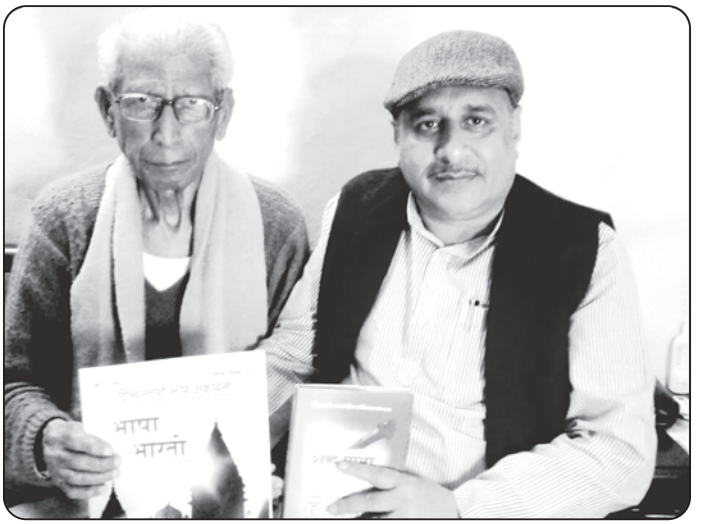

ज्ञातव्य है कि डॉ. नामवर सिंह जैसी विभूति को मुख्य अतिथि के रूप में गत् वर्ष 'साहित्य समीक्षा सम्मान समारोह' में आमंत्रित करना चाहते थे क्योंकि देश के विभिन्न प्रदेशों से पधारे समीक्षकों की डॉ. नामवर सिंह जी के करकमलों से सम्मान प्राप्त करने की हार्दिक इच्छा थी, परन्तु उनके अस्वस्थ होने और चिकित्सकों की सलाह देने के कारण वे किसी भी आयोजन आदि में सम्मिलित होने हेतु विवश थे । आखिर वह दिन आया जब मुझे अकादमी के सलाहकार श्री विजय कुमार राय और राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के उप-सम्पादक डॉ. धनेश द्विवेदी के साथ उनके निवास पर साक्षात्कार करने का अवसर प्राप्त हुआ । जैसे ही हम उनके प्रवेश द्वार पर पहुंचे और अपना परिचय देने पर उनका अभिवादन किया उन्होंने गर्मजोशी से प्रत्युत्तर देते हुए स्वागत कर बैठने को कहा । इस दौरान डॉ. सिंह पहले की अपेक्षा ज्यादा स्वस्थ एवं सक्रिय दिख रहे थे । हमने समीक्षा संग्रह 'शब्द गाथा' और अकादमी की ओर से प्रकाशित 'हिन्दुस्तानी भाषा भारती' पत्रिका का अंक भेंट किया जिसे वे काफी देर तक देखते-पढ़ते रहे । उनकी भाव-भंगीमा से लग रहा था कि वे अकादमी के कार्यों से सन्तुष्ट हैं । तदुपरान्त उन्होंने पुस्तक एवं पत्रिका के लेखों और विषय-वस्तु की ओर भाषा एवं साहित्य के क्षेत्र में अकादमी के प्रयासों की प्रशंसा की और 'हिन्दुस्तानी भाषा भारती' पत्रिका की सफलता की कामना भी की । इस मुलाकात में मैंने महसूस किया कि एक बहुत ही सादगीपूर्ण जीवन जी रहे डॉ. साहब आज भी हिन्दी साहित्य में पूरी रुचि और ऊर्जा के साथ कार्यरत हैं । हिन्दी सहित दूसरी भाषाओं के प्रति उनका अत्यधिक लगाव है । प्रस्तुत हैं उनसे बातचीत के प्रमुख अंश....

प्रश्न : हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के प्रयासों को किस प्रकार देखते हैं ?

उत्तर : अकादमी के प्रयास निश्चित रूप से सराहनीय हैं। आपका पिछला अंक जो बुंदेलखंडी लोकभाषा पर आधारित था, उसे देखकर मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हुई। बुंदेलखंडी भाषा का साहित्य बहुत ही गौरवशाली है परंतु धीरे-धीरे लोग बुंदेलखंड के साहित्य से दूर होते जा रहे हैं जो चिंताजनक है। जिस प्रकार से आज भाषा की स्थिति है उसे देखकर मुझे डर लगता है कि आने वाली पीढ़ी तक पहुँचते पहुँचते भाषा का स्वरूप क्या होगा ।

प्रश्न : आपके अनुसार भाषा की इस स्थिति का मुख्य कारण क्या है ?

उत्तर : जहां तक मैं समझता हूं, इसका मुख्य कारण यह है कि हम अपनी बोलियों को सहेज कर नहीं रख पाए, आज बोलियां खत्म होती जा रहीं हैं। हम सभी जानते हैं कि बोलियों से ही भाषा बनती है, बोलियां भाषा का स्रोत होती हैं। जब तक बोलियां जिंदा हैं तभी तक भाषा जिंदा रहती है, इस लिए आवश्यक है कि बोलियों को

जिंदा रखा जाए। बोली और भाषा के प्रति लोग संवेदनहीन हो गए हैं, यही कारण है कि बोलियां मरती जा रहीं हैं। मुझे यह जानकर हैरानी होती है कि भारत में आजादी से पूर्व भाषा पर सर्वे किया गया था परंतु आजादी के बाद इस प्रकार की कोई आवश्यकता महसूस नहीं की गई।

प्रश्न : आपको लगता है कि इस प्रकार के सर्वे की आवश्यकता है ?

उत्तर : आज इस प्रकार के सर्वे की निश्चित रूप से आवश्यकता है। अगर हमें यह ज्ञात नहीं होगा कि देश में कितनी बोलियां हैं और उनकी क्या उपयोगिता है, तब तक उनके संरक्षण तथा संवर्धन की दिशा में कार्य करना कठिन होगा। मैं यह भी स्पष्ट कर दूं कि बोलियों की उपेक्षा देश के भविष्य के लिए ठीक नहीं है।

प्रश्न : बोलियों की उपेक्षा का प्रमुख कारण आप क्या समझते हैं ?

उत्तर : इसमें आम जन की भूमिका को अहम माना जाना चाहिए और यदि आप कारण पूछते हैं तो इसका कारण मैं अपने आप को भी मानता हूं क्योंकि मेरे प्राध्यापक रहते हुए यदि एक भी छात्र भाषा के प्रति उदासीन रहता है तो यह मेरी जिम्मेदारी बनती है कि इसका कारण मैं अपने आप को समझूं। वैसे आजकल कोई अपनी जिम्मेदारी लेने को तैयार नहीं होता है और बात जब गलती की हो तो बिल्कुल भी नहीं।

प्रश्न : हिन्दी साहित्य में आलोचना की दृष्टि से किस प्रकार का बदलाव महसूस करते हैं।

उत्तर : बहुत बदल गया है। आज सबसे ज्यादा आलोचना की पुस्तकें प्रकाशित होती हैं परंतु सबसे बुरा हाल भी आलोचना का ही है। अब आलोचकों में मौलिकता की कमी दिखाई पड़ती है। लोग मूल विषय न पढ़कर सीधे आलोचना की पुस्तक ही पढ़ते हैं जिससे आलोचना की गुणवत्ता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसलिए एक अच्छे आलोचक के लिए आवश्यक है कि वह पुस्तक के हर पहलू पर विशेष ध्यान देते हुए आलोचना करें। आलोचना का कार्य केवल पुस्तक की कमियों को उजागर करना ही नहीं होता बल्कि पुस्तक के लेखक की सोच को अधिक वृहद बनाना होता है।

प्रश्न : हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी की ओर से समीक्षा के लिए "समीक्षा सम्मान" और समीक्षा पुस्तक प्रकाशन का कार्य किया जा रहा है । आप इस प्रयास को किस रूप में देखते हैं ?

उत्तर : समीक्षा सम्मान प्रारम्भ करने के समय भी अकादमी ने मुझसे संपर्क किया था तब भी मैंने यही कहा था कि यह एक अद्‌भुत प्रयोग है, जिसने भी इस योजना की परिकल्पना की है मैं उसे बधाई देता हूँ । निश्चित रूप से इस आयोजन से समीक्षकों की एक नई पौध पैदा होगी । यह पूरा आयोजन, एक पुस्तक पर समीक्षाएं, उनको पुस्तक के रूप में लाना और फिर समीक्षकों का सम्मान भी अपने आप में सराहनीय कार्य है ।

प्रश्न : हिन्दुस्तानी भाषा भारती के पाठकों को क्या संदेश देना चाहेंगे ?

उत्तर : अकादमी इस दिशा में महत्वपूर्ण कार्य कर रही है यह जानकर मुझे प्रसन्नता है। हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी से मेरी यही आशा है कि बोलियों को जिंदा रखने में महत्वपूर्ण योगदान देने में ही सफलता प्राप्त होगी। आज भाषा और बोलियों को जिंदा रखने के लिए आंदोलन की आवश्यकता है और यहां यह भी स्पष्ट करना आवश्यक है कि आंदोलन केवल भीड़ जमा करना ही नहीं होता बल्कि अपने कार्य को गतिशील रखना भी आंदोलन ही है। इस दिशा में हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी द्वारा अलग-अलग भाषाओं को विशेष स्थान देना एक सराहनीय प्रयास है। मैं हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी को सफल कार्य निष्पादन के लिए बधाई देता हूं तथा आशा करता हूं कि इसी प्रकार हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी हिंदी सहित दूसरी भारतीय भाषाओं के प्रति निष्ठा से कार्य करती रहेगी। मैं अकादमी के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

-सुधाकर पाठक

आज तुम्हारा जन्मदिवस

आज तुम्हारा जन्मदिवस, यूँ ही यह संध्या
भी चली गई, किन्तु अभागा मैं न जा सका
सम्मुख तुम्हारे और नदी तट भटका-भटका
कभी देखता हाथ कभी लेखनी अबन्ध्या ।

पार हाट, शायद मेल; रंग-रंग गुब्बारे ।
उठते लघु-लघु हाथ, सीटियाँ; शिशु सजे-धजे
मचल रहे... सोचूँ कि अचानक दूर छः बजे ।
पथ, इमली में भरा व्योम, आ बैठे तारे

'सेवा उपवन', पुष्पमित्र गंधवह आ लगा
मस्तक कंकड़ भरा किसी ने ज्यों हिला दिया ।
हर सुंदर को देख सोचता क्यों मिला दिया
यदि उससे वंचित रह जाता तू...?

क्षमा मत करो वत्स, आ गया दिन ही ऐसा
आँख खोलती कलियाँ भी कहती हैं पैसा।

-डॉ० नामवर सिंह